B. A. Part II, History Hons (1)

Paper-IV (History of Asia) 28.5.20

Unit-I

पाठ : जापान का खोला जाना (Opening of Japan)

19 वीं सदी के मध्य तक जापान व्यापार एवं धर्म प्रचार के मामलों में बंद दरवाजे की नीति का अवलम्बन कर रहा था और किसी भी विदेशी जहाज को जापानी बंदरगाहों पर प्रवेश वर्जित था। सोलहवीं 16 वीं सदी में भारत और चीन की तरह जापान के समुद्री तट पर यूरोपीय व्यापारी और ईसाई धर्म प्रचारक पहुँचे और बस्तियाँ बनाकर व्यापार एवं धर्म प्रचार के कार्यों में संलिप्त भी हुए, किन्तु 16 वीं सदी के 80 के दशक में इन दोनों कार्यों पर रोक लगा दी गई। फिर 17 वीं सदी की शुरुआत में इन्हें जब छूट दी गई, तो वे मनमानी करने लगे। परिणामतः 1637-38 में जापान की सरकार ने यूरोपीय जहाजों के प्रवेश ही निषेधित कर दिया और उन्हें को छोड़कर बांकी सभी यूरोपीय देशों के व्यापार को समाप्त कर दिया। इसप्रकार जापान का दरवाजा विदेशी व्यापारियों एवं धर्म प्रचारकों के लिए बंद हो गया।

19 वीं सदी की परिवर्तित परिस्थिति में, जबकि भाप के इंजन से चलने वाले जहाजों और औद्योगिक क्रांति ने व्यापार-वाणिज्य को प्रोत्साहित किया तो जापान के बंद दरवाजे को एकबार फिर से खोलने का प्रयत्न प्रारंभ हुआ, जिसकी पहलकदमी अमेरिका ने की। 1840 के बाद अमेरिकियों की जापान में दिलचस्पी गहरी होने लगी। इस समय तक अमेरिका प्रशान्त महासागर तक अपना औपनिवेशिक विस्तार कर चुका था। 1840 में दो अमेरिकी जहाज जापानी सरकार से मिलकर राजनीतिक सम्बन्ध कायम करने के उद्देश्य से येदो की खाड़ी में भेजे गए। परन्तु अमेरिका के इस मिशन को सफलता नहीं मिली। लेकिन इससे अमेरिका निराश नहीं हुआ। नवम्बर 1852 में अमेरिका ने एक दूसरा मिशन कमोडोर पेरी के नेतृत्व में जापान भेजा। इस मिशन को अमेरिकी राष्ट्रपति द्वारा हस्ताक्षरित एक पत्र जापानी सरकार को सुपुर्द करने का जिम्मा दिया गया। इस पत्र में मांग की गई थी कि — 1. यदि कोई अमेरिकी जहाज जापान के निकटवर्ती समुद्र में टूट जाय अथवा संकट में फंस जाय तो उसे जापान के बन्दरगाह में लंगर डालने, जहाज की मरम्मत करने, इंधन तथा खाद्य सामग्री प्राप्त करने की अनुमति दी जाय। 2. अमेरिका के व्यापार के लिए जापानी बंदरगाह खोल दिए जांय। कमोडोर पेरी के जहाज की सुरक्षा के लिए दो अन्य जहाज भी भेजे गए, जिनमें अमेरिकन सैनिक भरे थे।

3 जुलाई 1853 को पेरी इन जहाजों को लेकर योकोहामा की खाड़ी में पहुँचा, जिसे जापानी तटरक्षकों ने बन्दरगाह की ओर बढ़ने से रोक दिया और तोप के गोले दागे। किन्तु कमोडोर पेरी रुकने वाला नहीं था और जवाबी कार्रवाई करते हुए जापान के तट पर पहुँचा और जापानी तटरक्षकों को यह कहते हुए अमेरिका का पत्र सौंपकर लौट गया कि वह एक वर्ष बाद इस पत्र का उत्तर लेने पुनः आएगा।

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA

अमेरिकी मिशन के वापस लौटते ही फ्रांस और ब्रिटेन के युद्धपोत भी जापान के समुद्री क्षेत्र में चक्कर लगाने लगे। जापान इस परिस्थिति में भारी दबाव महसूस कर रहा था। वह मध्यकालीन युद्ध पोतों और सैनिक साजो-समान से इनका मुकाबला नहीं कर सकता था। कमोडोर पेरी ने अपने पत्र के जवाब के लिए एक वर्ष तक प्रतीक्षा करना मुनासिब नहीं समझा। फरवरी 1854 में पेरी अपने दलबल के साथ दोबारा जापान पहुँच गया।

जापान आधुनिक अस्त्र-शस्त्रों से सज्जित जहाजों का सामना नहीं कर सकता था। विवशतः उसने कमोडोर पेरी की शर्तों को मानते हुए संधि कर ली। इस सन्धि के अनुसार अमेरिकी जहाजों को जापानी बन्दरगाहों पर प्रवेश तथा लंगर डालने की अनुमति मिल गयी। इसके साथ ही अमेरिका का एक प्रतिनिधि स्थायी तौर पर जापान में रहेगा, इस बात पर जापान सहमत हो गया। अमेरिका का अनुसरण अन्य यूरोपीय देशों ने किया और 1854 में इंगलैंड को 1855 में रूस को और 1857 में हालैंड को भी वे सारी सुविधाएँ प्राप्त हो गईं, जो जापान ने अमेरिका को दी थी। किन्तु इन सन्धियों से उन्हे जापान में प्रवेश ही मिला था। व्यापार-वाणिज्य के लिए अब भी जापान का दरवाजा बन्द था।

1854 की सन्धि के अनुसार टाउनशेंड हैरिस अमेरिका का प्रथम प्रतिनिधि एवं राजदूत बनकर जापान पहुँचा। वह काफी चतुर व्यक्ति था। उसने जापान के राजनेताओं से घनिष्ट सम्बन्ध बनाए और उन्हे बतलाया कि 19वीं सदी में जापान का एकान्तवास स्वयं उसके लिए घातक होगा और अमेरिका एवं यूरोपीय देशों से व्यापारिक सम्बन्ध बनाने से जापान का कायाकल्प हो जायगा। हैरिस अपने प्रयत्न में सफल रहा और 1858 में अमेरिका तथा जापान के बीच दूसरी संधि हुई, जिसके अनुसार पहले के तीन बन्दरगाहों के चार नए बन्दरगाह अमेरिका के लिए खोल दिए गए और वे सारी सुविधाएँ अमेरिका को प्राप्त हो गईं, जो उसे चीन तथा अन्य पूर्वी एशियाई देशों में हासिल थीं। इस संधि द्वारा आयात-निर्यात कर को भी निर्धारित कर दिया गया, जिसमें बिना अमेरिका की सहमति के जापान बढ़ोत्तरी नहीं कर सकता था। इसके साथ ही जापान में रहने वाले अमेरिकी नागरिकों को जापानी कानून एवं न्याय के दायरे से बाहर रखा गया। इस प्रकार अमेरिका ने जापान में अतिरिक्त क्षेत्राधिकार भी प्राप्त कर लिए। एकबार फिर फ्रांस, ब्रिटेन, हालैंड और रूस ने भी अमेरिका का अनुसरण किया और इसी के समान सारी व्यापारिक एवं न्यायिक सुविधाएँ हासिल कर लीं, जो अमेरिका को मिली थीं। जाहिर है कि 1858 में बन्द व्यापारिक दरवाजों को औपनिवेशिक शक्तियों ने खोल दिया, जिसे इतिहास में जापान का खोला जाना कहा जाता है।

डा० शंकर जय किशन चौधरी, अतिथि शिक्षक
इतिहास विभाग, डी० बी० कालेज, जयनगर

REDMI NOTE 8
AI QUAD CAMERA